

ISSN: 0972 - 2351

# मत्स्यगंधा

2005

मात्स्यिकी और पर्यावरण



केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान

(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)

कोचीन 682 018





## मत्स्य पालन में बाँस का उपयोग

विनीता कुशवाहा, एन.एन. पाण्डेय, राघवेन्द्र सिंह एवं अर्जुन अधिकारी

गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर, उत्तरांचल

बाँस जिसे अंग्रेजी भाषा में Bamboo के नाम से जाना जाता है का वानस्पतिक नाम Bambusa है।

पादप जगत में पाये जाने वाले समस्त पेड़-पौधों में बाँस अपनी विलक्षण व तीव्रतम गति से होने वाली वृद्धि के लिए संसार भर में विख्यात है।

बाँस हमारे देश के विभिन्न भागों में आसानी से उपलब्ध होने वाला वृक्ष है। बाँस मूल रूप से नम व अधिक वर्षा वाले, पर्वतीय स्नानों पर पाए जानेवाला वृक्ष है। आसम, उत्तरांचल व तराई के क्षेत्र में बाँस प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

दैनिक जीवन के साथ ही साथ, बाँस मत्स्य पालन में भी अति उपयोगी है। मत्स्य पालन में विभिन्न कार्यों हेतु बाँस का प्रयोग किया जाता है जोकि निम्न प्रकार हो सकते हैं।

- केज कल्चर हेतु केज निर्माण में
- राफ्ट बनाने हेतु
- मत्स्य प्रजनन हापा की व्यवस्था में
- मत्स्य आहार देने में
- मछली पकड़ने के जालों में
- समन्वित मत्स्य पालन में
- तालाब के टूटे-फूटे बाँधों की मरम्मत में
- बाँस सह मत्स्य पालन में

पत्रव्यवहार : एन.एन. पाण्डेय, प्रभारी, कालेज लाइब्रेरी,

मत्स्यविज्ञान महाविद्यालय

गोविंद वल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक

विश्वविद्यालय, पंतनगर, उत्तरांचल

• **केज निर्माण में** - केज कल्चर आज के समय में काफी प्रचलित है जिसमें कि विभिन्न मछलियों का संवर्धन होता है। केज निर्माण में, विभिन्न आकार के चीरे हुए बाँसों का प्रयोग किया जाता है। इन बाँसों की सहायता से एक पिंजरे के समान आकृति तैयार की जाती है, जिसे केज कहते हैं।

• **राफ्ट बनाने में** - मोलस्का संघ के विभिन्न जन्तुओं का संवर्धन सफलता पूर्वक, राफ्ट द्वारा लटकी हुयी रस्सियों पर खाली कवचों में किया जाता है। चीरे हुए बाँसों को एक दूसरे पर अतिव्यापित करके एक बड़े से अथवा आवश्यकतानुकूल फ्रेम का निर्माण किया जाता है जो कि राफ्ट कहलाता है। अतः राफ्ट बनाने में बाँस अति उपयोगी है।

• **मत्स्य प्रजनन हापा बाँधने हेतु** - मछलियों के प्रजनन हेतु हापा को बाँधने अथवा व्यवस्थित करने के लिए बाँस एक अत्यावश्यक सामग्री है। अतएव हापा की व्यवस्था हेतु बाँस मत्स्य पालन व बीजोत्पादन में लाभकारी है।

• **मत्स्य आहार देने हेतु** - मत्स्य आहार देने की कई विधियाँ प्रयोग में लायी जाती हैं। बोरे द्वारा पूरक आहार देना अच्छी विधियों में से एक है।

इस विधि में एक बाँस को तालाब के तल में गाढ़ देते हैं जिस पर मत्स्य आहार से भरी बोरी लटका दी जाती है।

ग्रास कार्प को पत्तियाँ इत्यादि देने हेतु भी बाँस के वर्गाकार फ्रेम अत्यन्त लाभकारी है। अतः हम समझ सकते हैं कि मत्स्य आहार देने में भी बाँस एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

• **मछली पकड़ने के जालों में बाँस का प्रयोग** - मछली पकड़ने के जालों में भी किनारे पर जाल, को खींचने हेतु बाँस



का प्रयोग किया जाता है, क्योंकि बाँस हल्का होने के साथ-साथ मजबूत भी होता है।

- **समन्वित मत्स्य पालन में** - समन्वित मत्स्य पालन में भी बाँस अति उपयोगी है, क्योंकि बत्तख सह मत्स्य पालन व मुर्गी सह मत्स्य पालन में बत्तख व मुर्गियों की आवास व्यवस्था हेतु बाँस का प्रयोग किया जाता है। बत्तखों व मुर्गियों के बाड़े बनाने में बाँस अति उपयोगी सिद्ध होता है।

- **तालाब के टूटे-फूटे बाँधों की मरम्मत में** - तालाब के टूटे फूटे बाँधों के पुर्ननिर्माण व मरम्मत कार्य में बाँस अति लाभकारी है। क्योंकि इन टूटे स्थानों को मिट्टी से जोड़ते समय बाँस अतिरिक्त मजबूती व दृढ़ता प्रदान करता है।

- **बाँस सह मत्स्य पालन** - बाँस सह मत्स्य पालन एक अत्यन्त लाभकारी व उपयोगी व्यवस्था है। जिसमें कि बाँस व मत्स्योत्पादन दोनों ही एक दूसरे के पूरक होते हैं। जहाँ एक ओर तालाब का जल व गाद बाँस के लिए जल व उर्वरक का कार्य करते हैं वहीं दूसरी ओर बाँस, मत्स्य पालन में विभिन्न कार्यों हेतु प्रयोग किया जाता है। बाँस की पत्तियों को तालाब में

डाल दिया जाता है जोकि पेरीफायटन की वृद्धि के लिए उत्तम सतह का कार्य करती है व अप्रत्यक्ष रूप से पेरीफायटन के रूप में मछलियों को उत्तम प्राकृतिक आहार उपलब्ध करती हैं।

इसके अतिरिक्त ताजे बाँस का प्रयोग मनुष्य द्वारा आहार के लिए भी किया जा सकता है व इसके प्रसंस्करण द्वारा विभिन्न मूल्य वर्धित उत्पाद जैसे बाँस का अचार इत्यादि भी तैयार किया जा सकता है।

**निष्कर्ष** - अतः इस प्रकार हमने पाया कि बाँस का प्रयोग मत्स्य पालन में अत्यन्त लाभकारी व उपयोगी है व इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि बाँस, मत्स्य पालन के विकास में अत्यन्त सहायक सिद्ध हो सकता है व बाँस सह मत्स्य पालन जैसी व्यवस्थायें तो और भी उपयोगी व लाभकारी हैं जोकि अत्यन्त रोजगार परक भी हैं।

अतः निःसन्देह कहा जा सकता है कि मत्स्य पालन में बाँस का प्रयोग जहाँ एक ओर पर्यावरण अनुकूल मत्स्य विकास की गति को त्वरित करेगा वहीं दूसरी ओर रोजगार के भी नये-नये आयामों को जन्म देगा।

---

**मुख्य शब्द/Keywords.**

केज कल्चर - cage culture

राफ्ट कल्चर - raft culture

हॉपा - hapa

पेरीफायटन - periphyton

